

## युवा प्रभाग-दिव्य दर्पण ग्रुप अगस्त-08 मास के पुरुषार्थ की पोईन्ट्स

अव्यक्तमूर्त बापदादा के सच्चे स्नेही, सदा परमात्म शक्तियों का अनुभव करते सफलता प्राप्त करने वाले, सदा सर्व सम्बन्धों से बाबा से प्रीत की रीत निभाने वाले निमित्त दैवी टीचर बहनों वा भाईयों और दिव्य दर्पण के सर्व सदस्यों प्रति,

युवा प्रभाग की ओर से दादी रतन मोहिनी जी एवं बी.के.चन्द्रिकाबहन की मधुर याद स्वीकार करना जी।

आपको बताते हुए अति हर्ष हो रहा है कि दिव्य दर्पण ग्रुप के सदस्यों की ओर से बड़े उमंग उत्साह भरे समाचार प्राप्त हो रहे हैं। आज दिन तक 3226 जितने भाई-बहनों ने अपना नाम दर्ज कराया है और चार्ट भर रहे हैं। अभी प्रोजेक्ट के प्रथम 7 मास पूरे हुए हैं और बहुत सुन्दर अनुभव प्राप्त हो रहे हैं।

शायद आप सबको संकल्प चल रहे होंगे कि अभी दिव्य दर्पण प्रोजेक्ट के 6 मास पूरे हुए हैं इसलिए अब चार्ट नहीं भरने होंगे और प्रोजेक्ट समाप्त हो गया। ठीक है ना! परन्तु “जब तक दिव्य दर्पण नहीं बने है तब तक चार्ट भरना ही है” यह दिव्य दर्पण ग्रुप वालों का स्लोगन है। यह विशेष ग्रुप संख्या बढ़ाने के लिए नहीं लेकिन बापदादा की आशा अनुसार दिव्य दर्पण बनकर गवर्नमेन्ट के सामने ग्रुप ले जाने के लिए बना है। अतः जिन भाई-बहनों के अब तक नियमित रूप से पोस्टकार्ड प्राप्त हुए हैं उन्हीं को अब SMS भेजे जायेंगे और दिव्य दर्पण ग्रुप के सदस्य माने जायेंगे।

आप सभी जानते हैं कि यज्ञ में यह वर्ष “परमात्मा शक्ति अनुभूति” वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है तो दूसरे 6 मास के पुरुषार्थ की रूपरेखा निम्नलिखित रूप से रहेगी:

- ✓ जुलाई और अगस्त -बाबा से सर्व सम्बन्धों द्वारा अव्यभिचारी याद, लक्ष्य - क्रोध मुक्त।
- ✓ सितम्बर और अक्टूबर-जीवन की छोटी-छोटी बातों में परमात्म शक्तियों की अनुभूति, लक्ष्य - सम्पूर्ण अनासक्त।
- ✓ नवम्बर और दिसम्बर -मन्सा श्रेष्ठ स्थिति के द्वारा विश्व कल्याण की सेवा (योग के प्रयोग), लक्ष्य - सम्पूर्ण निर्विकारी।

अगस्त मास का चार्ट: इस मास में भी हम विशेष बाबा से सर्व सम्बन्धों द्वारा अव्यभिचारी याद का अनुभव करेंगे और सम्पूर्ण क्रोध मुक्त बनने का लक्ष्य रखेंगे।

विधि:

इस मास में चार साप्ताह के लिए चार सम्बन्धों का अनुभव करेंगे और क्रोध के निम्नलिखित चार स्वरूपों से मुक्त बनेंगे:

सप्ताह	सम्बन्ध	गुण	स्लोगन	दिव्य दर्पण की धारणा	क्रोध मुक्त
प्रथम	माँ	स्नेह	तेरी ईश्वरीय गोद कभी न छोड़ेंगे	सारे दिन में कितने काम पूछकर किये और अनुभव लिखना है	रोना मुक्त
दूसरा	सखा	पारदर्शिता	साथी साथ निभाना	खुदा दोस्त के कौन-से कार्य में आज मददगार बनगें और कैसे	चिड़चिड़ापन से मुक्त
तीसरा	सर्जन	निश्चयबुद्धि	बुरा न सोचो, देखो, सुनो, बोलो और करो	अपने में कौनसी बीमारी को महसूस किया और सर्जन से कौनसी दवाई या इन्जेक्शन लिया	जोर से बोलने से मुक्त
चौथा	धर्मराज	सच्चाई - सफाई	एक बार की हुई भूल दुबारा न हो	आज जो गलती हुई, उसका माफी पत्र और परिवर्तन के लिए दृढ़ संकल्प	संकल्प में भी क्रोधमुक्त

❖ फ्रेमबुक में ऊपर चार पंक्तियों में निम्नलिखित बिन्दु लिखकर उसका परिणाम प्रतिदिन रात को सोने से पहले लिखें:

- |                       |                              |                        |
|-----------------------|------------------------------|------------------------|
| 1. गुड मोर्निंग -     | 2. अमृतवेला -                | 3. व्यायाम/पैदल -      |
| 4. ट्राफिक कंट्रोल-   | 5. मुरली क्लास -             | 6. अव्यक्त मुरली पढ़ी? |
| 7. स्वमान की स्मृति-  | 8. बाबा से संबंध की अनुभूति- | 9. नुमा शाम का योग-    |
| 10. क्रोध मुक्त रहे - | 11. गुड़ नाईट -              |                        |

- बाबा से सम्बन्ध की अनुभूति - अगर बाबा से सर्व सम्बन्ध की अनुभूति नहीं की तो जिस सम्बन्ध की अनुभूति नहीं की होगी वह सम्बन्ध पुराने संसार में जरूर खिंचेगा। यह सुख सारे कल्प में केवल संगमयुग में ही प्राप्त होता है। अनुभूति कैसी रही वह लिखना है- साधारण, विशेष, अति समीप।
- क्रोध मुक्त रहे- अगर हाँ तो ✓ निशान लगाना है और अगर ना तो ✗ निशान लगाना है और लिखना है कि कौन-सा संस्कार इमर्ज हुआ जैसे कि- रोना आया।
- ❖ इस बार जो स्वमान लिखते थे उसमें परिवर्तन कर रहे हैं। स्वमान के बदले ऊपर जो धारणा की पोइन्ट लिखी है वह फ्रेम बुक में आज की मुरली के पश्चात् इस प्रकार लिखना है:
  1. प्रथम सप्ताह - सारे दिन में कितने काम पूछकर किये वो लिखना है: सारे दिन में हम जो कर्म करें उसमें यह लक्ष्य रखना है कि शिव माँ को पूछकर करना है तो कौन-से कार्य पूछकर किये वो लिखना है और क्या अनुभव रहा।
  2. दूसरा सप्ताह - खुदा दोस्त के कौन-से कार्य में आज मददगार बनंगे और कैसे: अमृतवेले यह खुदा दोस्त को पूछे कि आज कौन-से कार्य में मैं मददगार बनूँ वह संकल्प ले और कैसे बने वह लिखना है।
  3. तीसरा सप्ताह - अपने में कौनसी बीमारी को महसूस किया और सर्जन से कौनसी दवाई वा इन्जेक्शन लिया: अमृतवेले सर्जन को कनसल्ट कर अपने में जो भी कमजोरी या बीमारी महसूस करते हो वह बताना और कौनसा इन्जेक्शन शक्तियों के रूप में लिया एवं मुरली क्लास में ज्ञान की कौनसी गोली ली उसका अनुभव लिखना।
  4. चौथा सप्ताह-आज कौन-सी गलती हुई, उसका माफी पत्र और परिवर्तन के लिए दृढ़ संकल्प: धर्मराज बाबा को सामने रख अपनी छोटे ते छोटी गलती को महसूस कर माफी पत्र लिखे और उसे निकालने के लिए कौनसा दृढ़ संकल्प लेंगे।

#### ❖ सम्पूर्ण क्रोध मुक्त बनना:

सम्पूर्ण क्रोध मुक्त बनने के लिए बहुत सूक्ष्म रूप से स्वयं को चेक करना है जैसे कि चिड़चिड़ापन क्यों आता है, कब आता है, कैसे आता है और उसे दूर करने के लिए बाबा के महावाक्य क्या है और मुझे किस प्रकार से उसे धारण करना है। उस पर विजयी बनने के लिए मैं क्या करूंगा/करूंगी। एक सप्ताह के लिए लगातार उस कमजोरी के पीछे मेहनत करके उसे भगाना ही है। उस के लिए विशेष बाबा से शक्ति लेनी है।

स्वमान:

<b>माँ के सम्बन्ध में:</b>	16. मैं आत्मा परम सर्जन की छत्रछाया में सुरक्षित हूँ।
1. मैं आत्मा लाड़ला बच्चा हूँ।	17. मैं आत्मा ज्ञानामृत का पान कराती हूँ।
2. मैं आत्मा कुल दीपक हूँ।	18. मैं आत्मा निर्विकारी हूँ।
3. मैं आत्मा आज्ञाकारी बच्चा हूँ।	19. मैं आत्मा मास्टर पतित पावन हूँ।
4. मैं आत्मा समझ सयाना बच्चा हूँ।	20. मैं आत्मा ज्ञान इन्जेक्शन लेनेवाली हूँ।
5. मैं आत्मा आँखों का तारा हूँ।	21. मैं आत्मा योग की डील से तन्दुरस्त रहनेवाली हूँ।
6. मैं आत्मा बाबा की गोद में सुरक्षित हूँ।	<b>धर्मराज के सम्बन्ध में:</b>
7. परमात्मा माँ का हाथ मुझ आत्मा के सिर पर हूँ।	22. मैं आत्मा कर्मों की गुह्य गति की ज्ञाता हूँ।
<b>सखा के सम्बन्ध में:</b>	23. मैं आत्मा अपने कर्मों का साक्षी द्रष्टा हूँ।
8. हजार भुजा वाला भगवान मुझ आत्मा का साथी है।	24. मैं आत्मा पास वीथ ऑनर हूँ।
9. मैं आत्मा खुदाई खिदमतगार हूँ।	25. मैं आत्मा काल पर जीत पाने वाली कालजीत हूँ।
10. मैं आत्मा खुदा दोस्त हूँ।	26. मैं आत्मा विकर्माजीत हूँ।
11. मैं आत्मा मददगार हूँ।	27. मैं आत्मा प्रकृतिजीत हूँ।
12. मुझ आत्मा का दोस्त सर्व शक्तिवान हैं।	28. मैं आत्मा मायाजीत हूँ।
13. स्वयं भाग्यविधाता मुझ आत्मा का दोस्त हैं।	29. मैं आत्मा सत्य धर्म स्थापना के निमित्त हूँ।
14. खुदा दोस्त का श्रीमत् रुपी हाथ मेरे हाथ में हैं।।	30. मैं आत्मा पूर्वज हूँ।
<b>सर्जन के सम्बन्ध में:</b>	31. मैं आत्मा कर्मन्द्रियजीत हूँ।
15. मैं आत्मा सम्पूर्ण निरोगी हूँ।	